1968 की क्रांतियाँ और यूरोप में नई सामाजिक राजनीति का उदय
The Revolutions of 1968 and the Rise of New Social Politics in Europe

1968 का वर्ष यूरोपीय इतिहास में सामाजिक और सांस्कृतिक विद्रोह का प्रतीक माना जाता है। फ्रांस, जर्मनी, इटली और अन्य देशों में छात्र आंदोलनों, श्रमिक हड़तालों तथा बौद्धिक प्रतिरोध ने पारंपरिक सत्ता संरचनाओं को चुनौती दी। यह आंदोलन केवल राजनीतिक परिवर्तन तक सीमित नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक और वैचारिक पुनर्संरचना का भी प्रतीक था।

फ्रांस में मई 1968 का छात्र आंदोलन पूँजीवाद, उपभोक्तावाद और पारंपरिक नैतिक मूल्यों के विरुद्ध व्यापक विद्रोह के रूप में उभरा। इसी प्रकार पश्चिमी जर्मनी में युवा आंदोलनों ने राज्य, युद्ध नीति और सामाजिक असमानता के विरुद्ध आवाज उठाई। इन आंदोलनों ने स्त्रीवाद, मानवाधिकार और पर्यावरणीय राजनीति जैसी नई सामाजिक शक्तियों को जन्म दिया।

इतिहासकारों के अनुसार 1968 की क्रांतियाँ पारंपरिक वर्ग-आधारित राजनीति से हटकर पहचान-आधारित राजनीति (Identity Politics) की ओर संक्रमण का संकेत थीं। यह सांस्कृतिक क्रांति आधुनिक उत्तर-औद्योगिक समाज के विकास से भी जुड़ी थी।

इस प्रकार 1968 के आंदोलन ने यूरोप की राजनीति, शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया और आधुनिक लोकतांत्रिक समाज के नए विमर्शों की नींव रखी।